B.A Part -1 LLM / Date - 06.05.2020

प्रश्न: हम घरसँ निकलि गेलहुँ। बड़ी काल धरि गंगा कातमे बैसल रही। साहस नहि भेल प्राण देबाक, आत्म हत्या करबाक। ओतँ लग आबि गेल छी, कहब त "फेर घुरि जायब।"

उत्तर: प्रस्तुत गद्यांश श्री प्रभास कुमार चौधरी लिखित 'हमरा लग रहब?' उपन्याससँ लेल गेल अछि। एहि गद्यांशमे शीलाक कथन अछि। ओ जखन गाम सँ आबय अपन पति प्रो० मा। कें डेरा पर अबैत छथि त' ओ मिथ्या आशंकामे अनेक प्रश्न करैत छथिन। शीला समजि जबाब तत्काल देब उचित नहि बुझलनि। तखन कुपित भ' प्रो० मा नंगटीया क' शीला कें घर सँ निकालि देलनि।

शीला आत्महत्या करबाक उद्देश्यसँ गंगा कात गेल छलीह मुदा साहस नहि भेलनि त' ओ अपन बालसंगी प्रणवक डेरा चलि अबैत अछि। ओ प्रश्न करैत अछि आब क ओतँ कहब त' हम घुरि जायब।

1. "एक दिन ओसँ प्रणवक संग भूख हड़ताल लगा
घरसँ निकालि लागल रही नंगटिया क'। नाढ़िया ओ
भूख बाढ़के सब भ' गेल। प्रणव नहि रहल तैं की
आर कतेक लोक। ओर दिन ओ घरमे नंगटिओलकै
अहाँ, तकर बाद प्रत्येक ऐस - ऐस हाथ हमर
नुआ उनटबैत रहल, एक दू दिन नहि, दसवर्ष
धरि।"

उत्तर: प्रस्तुत गद्यांश श्री प्रभास कुमार चौधरी लिखित
आख्यानक अछि। एहि गद्यांशमे शीला के अपन
पति प्रो० झा घरसँ निकालि देलकनि त' ओ
असहाय अवस्थामे एक स्कूलमे शिक्षिका भेलीह।
ओतुका स्कूलक व्यवस्थापक आर के, कतोँ सेहो
हिनक दैहिक शोषण कैलकनि। आर प्रो० झा
धनक लोभ मे ओ शीलाकेँ अपना घर चलबा
लेल कहैत छथिन। मुदा शीला अपन संग

भेल अत्याचारकेँ स्पष्ट उल्लेख करैत कहैत छथि। जेँ अहाँ ओहि दिन घर सँ नहि निकालने रहितहुँ तँ हमर ई दशा नहि भेल रहैत।

रानी मिश्रा
मैथिली विभाग
R.N. College, pandaul,
Madhubani.

Scanned with CamScanner